Drishtikon
(UGC Care Journal)

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

लेश्या और उसके भेद में व्यक्तित्व लक्षण की अभिव्यंजना

प्रो बी एल जैन[1]

[1]विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाड़नूं, नागौर (राज.)

सारांश

जैसी मानसिक क्षमता वैसी वैचारिकता होती हैं वैसा ही आभामण्डल होता हैं।गलत कार्य सम्पादित किये जाने वाले स्थान पर बैठने मात्र से मन में अशुभ विचार आने लग जाते है। मदिराल में बैठने पर मदिरा के विचार, वैश्यालय में बैठने पर वासना के विचार, पाकशाला में बैठने पर भोजन के विचार, शौचालय में जाने पर शौच आदि से निवृत्त होने के विचार, कचरे के ढ़ेर में दुर्गंध तथा फूलों के ढेर में सुगन्ध के विचार आते हैं। जैसे विचार होंगे लेश्यामण्डल/ आभामण्डल वैसा ही होगा। विचार परिवर्तित होने से लेश्याएँ रंग बदलती हैं।

मुख्यशब्द: लेश्या, आभामण्डल, भामण्डल, चेतना।

प्रस्तावना

कुरूक्षेत्र की भूमि जहाँ युद्ध हुआ वहाँ का क्षेत्र दूषित था, उस क्षेत्र में गुरू ने शिष्य को, शिष्य ने गुरू को, पिता ने पुत्र को, पुत्र ने पिता को मारा। वहाँ श्रवणकुमार ने भी माता-पिता को तीर्थ कराने से मनाकर दिया, वहाँ से आगे जाकर श्रवण कुमार की भावदशाएँ बदली और तीर्थयात्रा पूर्ण करने का कृत संकल्प लिया। वैचारिक पवित्रता होगी तो भाव दशाएँ अच्छा या शुभ कार्य करती हैं। भावों का आधार हैं लेश्या। जैसी लेश्या होगी वैसा आभामण्डल होगा, जैसा आभामण्डल होगा वैसे भाव एवं संवेग होंगे। भावों की विशुद्धि के लिए लेश्या, आभामण्डल, रंग एवं ध्यान का पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित किया जाए ताकि हमारे भाव अच्छे, शुद्ध, निर्मल और पवित्र बन सकें। इस संसार में जितने भी व्यक्ति हैं, वे सब एक दम अच्छे हां या एक दम बुरे हां, ऐसा नहीं है। वे अच्छे और बुरे दोनों रूप में होते हैं, जो भाव उभरकर आते हैं। ये अच्छाई या बुराई, मुख्य या गौण रूप में रहते हैं। ये अच्छाई या बुराई कैसे उभरकर आती हैं ये उभरकर आने का कारण लेश्या है। ये भाव लेश्या में रूपान्तरण होते हैं। लेश्या एक चैतन्य स्तर है, जहाँ पहुँचने पर रूपान्तरण घटित होता है और भावों का परिष्कार, परिशोधन एवं परिमार्जन होता हैं।

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

चेतना का स्तर

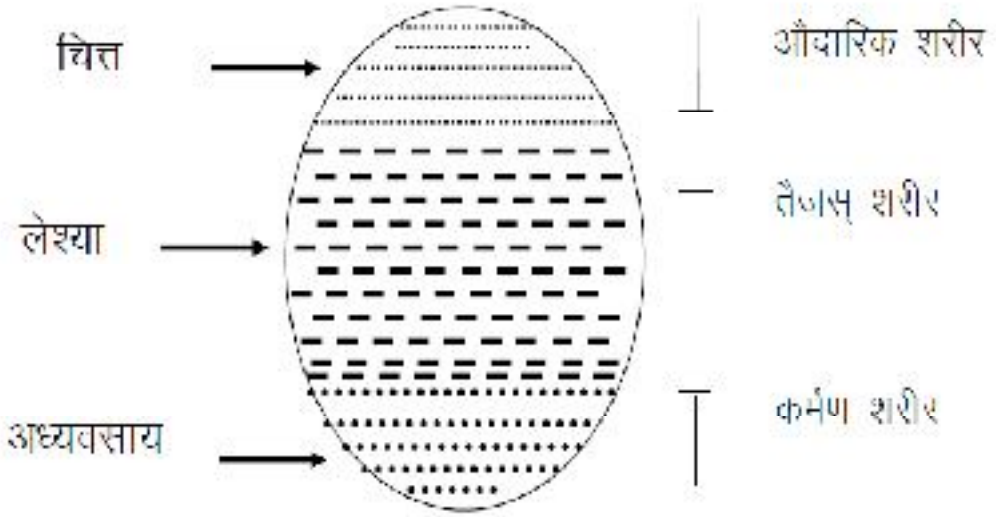

चेतना के तीन स्तर हैं-

1. चित्त- चेतना का यह स्तर स्थूल शरीर के साथ क्रियाशील रहता है।
2. लेश्या का स्तर - चेतना का यह स्तर तैजस् शरीर (विद्युत शरीर) के साथ काम करता है।
3. अध्यवसाय का स्तर - चेतना का यह स्तर अतिसूक्ष्म शरीर (कर्म शरीर) के साथ काम करता है।

चेतना शरीर के तीन स्तर के साथ कार्य करती हैं-

1. स्थूल शरीर
2. सूक्ष्म शरीर
3. अतिसूक्ष्म शरीर

तीन स्तर के आधार पर चेतना के तीन आयाम सामने आते हैं-

1. चित्त चेतना
2. लेश्या चेतना
3. अध्यवसाय चेतना

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

1. **चित्त चेतना - चित्त का जब सम्बन्ध स्थूल शरीर से होता है, उसे चित्त चेतना कहा जाता है। चित्त, मन और इन्द्रियाँ सब स्थूल शरीर से सम्बन्ध रखती हैं।**
2. **लेश्या चेतना - लेश्या का हमारे स्थूल शरीर से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। जिनके मस्तिष्क, सुषुम्ना, नाड़ी संस्थान हैं, उनके ही लेश्या होती है। जिन जीवों में मस्तिष्क, सुषुम्ना और नाड़ी संस्थान नहीं होते हैं उनमें लेश्या नहीं होती है जैसे एक स्पर्शन इन्द्रिय (वनस्पति) में भी लेश्या होती है।**

चेतना का लेश्या स्तर ही भावों का निर्माण करता है। यह स्तर ही सबसे अधिक क्रियाशील, सक्रिय एवं जागरूक होता है। मस्तिष्क या मन का कोई विचार, कोई सोच, कोई चिन्तन, कोई कल्पना, कोई निर्णय बिना लेश्या चेतना के नहीं होता है। वाणी की कोई प्रवृत्ति, शरीर की कोई क्रिया, बुद्धि की कोई क्रिया, चित्त की कोई क्रिया, स्थूल शरीर के तन्त्र और नाड़ी संस्थान (स्नायविक योग) के बिना नहीं हो सकती हैं। ज्ञानवाही स्नायु और नाड़ी और क्रियावाही स्नायु सम्पूर्ण क्रियाओं का संपादन करते हैं। लेकिन लेश्या के लिए इन दोनों स्नायुओं की आवश्यकता नहीं होती है। लेश्या स्थूल शरीर व स्नायु से परे है। आत्मनियंत्रण स्नायविक स्तर पर होता हैं और आत्मशोधन, आत्मपरिमार्जन और आत्म परिष्कार लेश्या स्तर पर होता हैं।

चेतना के विविध स्तरों का निर्माण-

1. अध्यवसाय स्तर का निर्माण

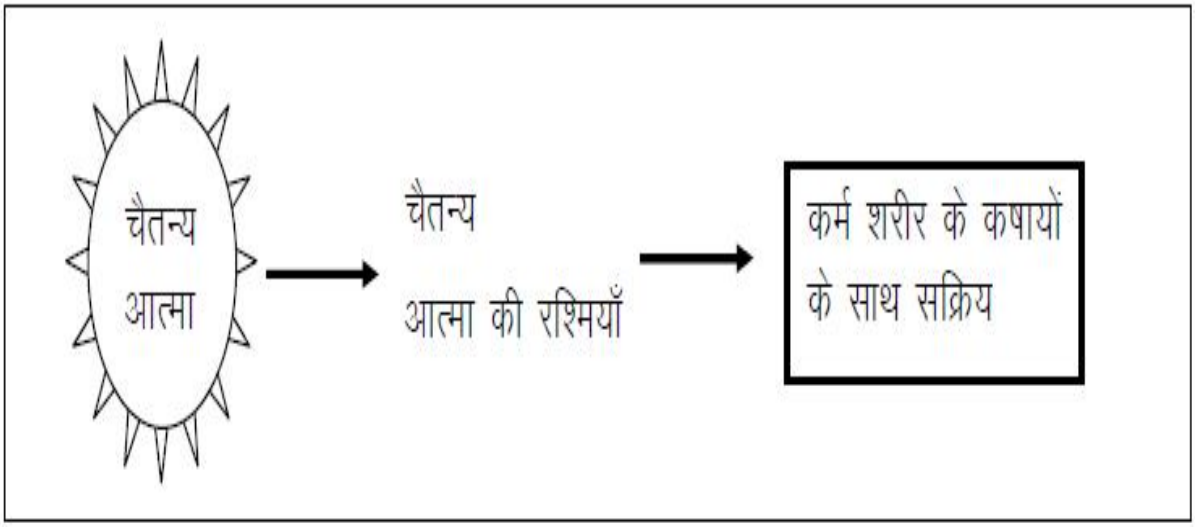

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

चैतन्य आत्मा की रश्मियाँ अनेक दिशाओं में क्रियाशील होती हैं, जब ये चैतन्य की रश्मियाँ कर्म शरीर के कषायों के साथ सक्रिय हो जाती हैं तब अध्यवसाय स्तर का निर्माण होता हैं।

2. लेश्या स्तर का निर्माण

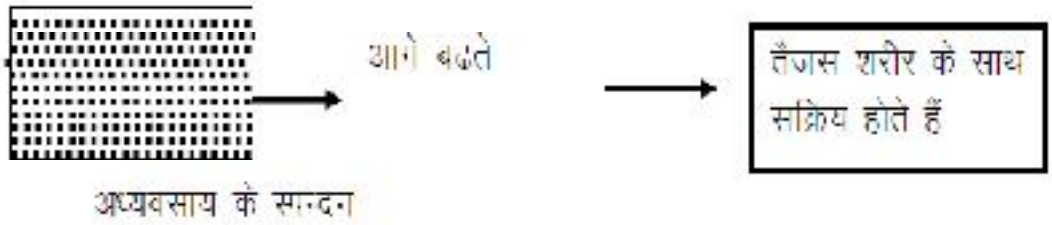

अध्यवसाय के स्पन्दन आगे बढ़ते हैं और तैजस् शरीर के साथ सक्रिय होते हैं तब लेश्या स्तर का निर्माण होता है। इसके द्वारा सम्पूर्ण भाव निर्मित होते हैं। इसलिए लेश्या भावों का आधार है। अच्छे या बुरे, सुख या दुःख, प्रसन्नता या अप्रसन्नता सभी लेश्या तंत्र के द्वारा निर्मित होते हैं।

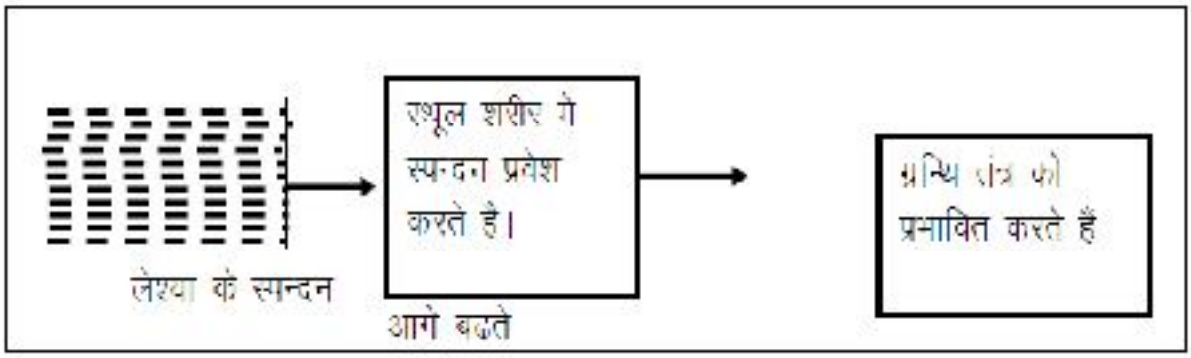

3. चित्त का निर्माण

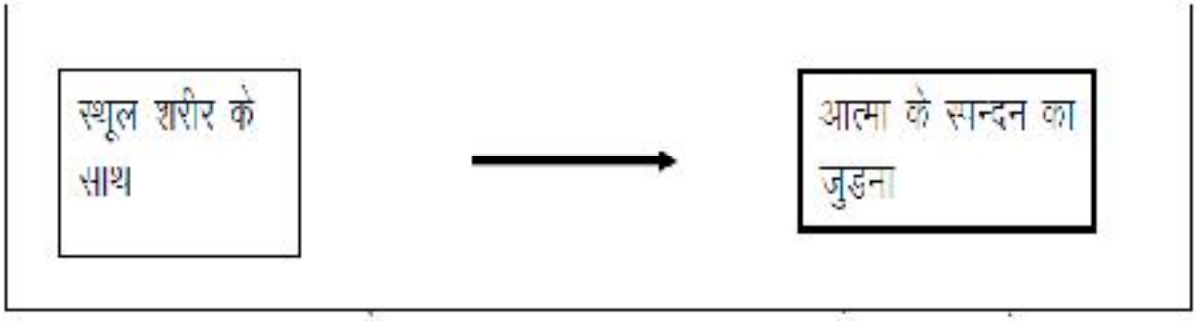

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

जिस दिशा में भाव प्रेरित करते हैं उसी दिशा में प्रवृत्ति तंत्र संचालित होता है। व्यक्ति का वैसा आचरण और व्यवहार होने लगता है।

लेश्या, आभामण्डल और भामण्डल

- **लेश्या - जैसे सूर्य की रश्मियाँ होती हैं, वैसे चेतना की रश्मियाँ होती हैं, उन्हें लेश्या कहते हैं। जैन आगम शास्त्र - नन्दी सूत्र की चूर्णि में यह शब्द रस्सी (रश्मि) से बना लस्सी और उससे बन गया - लेस्सा और उसमें बना लेश्या।**

एक समीकरण बन गया →रस्सी →लस्सी →लेस्सा →लेश्या।

महावीर का लेश्या सिद्धान्त दो धाराओं में चला → भाव, रंग] दोनों का योग लेश्या सिद्धान्त है।

➢ **आभामण्डल-**

आभामण्डल हमारा दर्पण है जिसमें व्यक्ति विचारों और भावनाओं को देख सकता है। अपने आचार और व्यवहार देख सकता है।

रश्मि

पूरे शरीर के चारों ओर जो वलय होता है, उसे आभामण्डल कहते हैं। इसे ओरा (।नतं) भी कहते हैं। व्यक्ति के आभामण्डल में जिस रंग की प्रधानता होगी उसी के अनुसार व्यक्तित्व और उसके गुण होंगे।

➢ **भामण्डल -इसे हेलो भी कहा जाता हैं।**

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

रश्मि

सिर के चारों ओर जो मंडलाकार होता है, वह भामण्ड हेलो है महापुरूषों के सिर के पीछे ज्योतिर्मय चक्राकार मण्डल देखने में आता है, उसे भामण्डल कहते हैं।

लेश्या के भेद में व्यक्तित्व लक्षण की अभिव्यंजना

1. कृष्ण लेश्या

तीव्रारंभ-परिणतः, क्षुद्रः साहसिकोऽयतिः।
पंचास्त्रवः प्रवृत्तश्च, कृष्णलेश्यो भवेत् पुमान्।।

संबोधि अध्याय - 16 श्लोक - 23वाँ

जो तीव्र हिंसा में परिणित है, बिना विचारे कार्य करता है, भोग से विरत नहीं है और पाँच आश्रवों में प्रवृत्त वह व्यक्ति कृष्ण लेश्या वाला होता है। हमेशा आवेग, आवेश व क्रोध में होता है। क्रोध करने वाला व हिंसा करने वाला व्यक्ति कभी यमराज के रूप में, कभी भस्मासुर के रूप में, कभी ज्वालामुखी के रूप में, कभी रावण के रूप में, कभी दुर्योधन के रूप में, कभी कंस के रूप में परिलक्षित होता है, ये सभी कृष्ण लेश्या की श्रेणी में आते हैं। इसका रंग काजल की तरह काला होता है। रस नीम से भी अधिक कड़वा, गंध मरे हुए साँप की गंध से ज्यादा बुरा, स्पर्श गाय की जीभ से अनन्त गुना कर्कश है। कृष्ण लेश्या वाला व्यक्ति हमेशा क्रूरता, हिंसा की भावधारा में होता है, इन्द्रियों पर नियंत्रण का अभाव होता है। ऐसे व्यक्ति के आभामण्डल में कृष्ण लेश्या की प्रधानता होती है।

चंडो ण मुंचई वेरं भंडणसीलो य धरमदयरहिओ।
दुट्ठो ण य एदि वंस, लक्खणमेयं तु किण्हस।।

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

स्वभाव की प्रचण्डता, रौद्रता, वैर की मजबूत गाँठ, झगडालू वृत्ति, धर्म और दया से शून्यता, दुष्टता, समझाने से भी नहीं मानना - ये कृष्ण लेश्या के लक्षण हैं।

2. नील लेश्या

ईर्ष्यालुर्द्वेषमापन्नो, गृद्धिमान् रसलोलुपः।
अह्नीकश्च प्रमतश्च, नीललेश्यो भवेत् पुमान्।।

संबोधि अध्याय 16 श्लोक 24वाँ

जो ईर्ष्यालु है, द्वेष करता है, विषयों में आसक्त है, सरस आहार में लोलुप है, लज्जाहीन और प्रमादी है वह व्यक्ति नील लेश्या वाला होता हैं। रंग - नीला, रस - सौठ से अनन्त गुणा तीखा, गंध - मृत सर्प की गंध से अनन्त गुना अनिष्ट, स्पर्श - गाय की जीभ से अनन्त गुना कर्कश है। उसके आभामण्डल में नील वर्ण की प्रधानता होती है। नील लेश्या वाले व्यक्ति की भावधारा में हमेशा ईर्ष्या, द्वेष वासना, काम, भुक्कड़पन निर्लज्जता होती है।

मंदो बुद्धिविहीणों, विव्विणाणी य विसय लोलोय।
लक्खणमेयं भणियं समासदो णील लेसस्स।।

मंदता, बुद्धिहीनता, अज्ञानता और विषय लोलुपता ये नील लेश्या के लक्षण हैं।

3. कपोत लेश्या

वक्रो वक्रसमाचारो, मिथ्यादृष्टिश्च मत्सरी।
औपधिको दुष्टवादी, कापोतीमाक्षितो भवेत्।।

संबोधि अध्याय - 16 श्लोक 25वाँ

जिसका चिन्तन, वाणी और कर्म कुटिल होता है, जिसकी दृष्टि मिथ्या होती है, जो दूसरों के उत्कर्ष को सहन नहीं करता, जो दम्भी है, जो दुर्वचन बोलता है वह व्यक्ति कपोत लेश्या वाला होता है। छल, कपट, वंचना और मत्सर्यभाव होता है, वह व्यक्ति कपोत लेश्या वाला होता है। कपोत लेश्या का रंग कबूतर के गले के समान हरे रंग वाला होता है, रस - कच्चे आम के रस से अनन्त गुना कषैला, गंध - मृत सर्प की गंध से अनन्त गुना अनिष्ट स्पर्श-गाय की जीभ से अनन्त गुना कर्कश होता है जो कपोत लेश्या प्रधान होता है।

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

रूसई णिंदई अन्ने, दूसई बहुसोय सोयभयबहुलो।
णगणइ कज्जाकज्जं लक्खणमेयं तु काउस्स।।

जल्दी स्पष्ट हो जाना, दूसरों की निंदा करना, दोष लगाना, अतिशोकाकुल होना और अत्यन्त भयभीत होना, ये कपोत लेश्या के लक्षण हैं।

4. तैजस-लेश्या

विनीतोऽपलोडमायी, दान्तश्चावद्यभीरूकः।
प्रियधर्मा दृढ़ धर्मा, तैजसीमाश्रितो भवेत्।।

संबोधि अध्याय - 16 श्लोक 26वाँ

जो विनीत है, जो चपलता रहित है, जो सरल है, जो इन्द्रिय का दमन करता है, जो पापभीरू है, जो धर्म प्रिय है और जो धर्म में दृढ़ है, वह व्यक्ति तैजस लेश्या वाला होता है। कुत्ते पर डण्डा उठाने के बजाय रोटी देने का भाव निहित होता है। सक्रियता, तेजिस्वता, शक्ति का स्त्रोत है। डॉक्टर देखता है कि रक्त में श्वेत कण कितने हैं व लाल कण कितने हैं। लाल रंग रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति का प्रतीक है। तेजो लेश्या का रंग सिन्दूर के समान लाल होता है। रस - पके आम के रस से अनन्त गुना मधुर, गंध-सुरभी पुष्प की गंध से अनन्त गुना इष्ट, स्पर्श - मक्खन से भी अनन्त गुना कोमल। जिसके आभामण्डल में अरूण रंग की प्रधनता होती है। तेजो लेश्या वाला व्यक्ति-विनम्र, संयमी, इन्द्रिय नियंत्रण, हितैषी, पाप से डरने वाला, धार्मिक आस्थावान होता है।

जाणई कज्जाकज्जं सेयम सेयं च सव्वसमपासी।
दयदाणरदो य मिंद्, लक्खणमेयं तु तेउस्स।।

कार्य-अकार्य का ज्ञान, ज्ञेय-अज्ञेय का विवेक, सबके प्रति समभाव, दया-दान में प्रवृति, ये तेजो लेश्या के लक्षण हैं।

5. पद्म लेश्या

तनुतमक्रोध- मान - माया - लोभो जितेन्द्रियः।
प्रशान्त चित्तो दान्तात्मा, पद्म लेश्यो भवेत् पुमान्।।

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

संबोधि अध्याय 16 श्लोक 27 वाँ

जिसके क्रोध, मान, माया और लोभ बहुत अल्प है, जो जितेन्द्रिय है, जिसका मन प्रशान्त है और जिसने आत्मा का दमन किया है, भोग साधन सामने होने पर त्याग कर देना, मकान छोड़ना, वैभव छोड़ना, प्रिय वस्तु का त्याग, भौतिक वस्तुओं का त्याग, वह व्यक्ति पद्म लेश्या वाला होता है। जैसे साँप केचुला का त्याग करता है, वैसे भगवान् महावीर ने सारे भौतिक संसाधन, भौतिक सुविधाएँ, भौतिक ऐश्वर्य, विलासिता का त्याग कर दिया। साधु बनने पर नंगे पैर चलना, प्रमाणिकता के साथ जीवन यापन करना, हाथ जोड़कर बोलना, सरल प्रकृति का होना, सामान टूटने पर भी कोई बात नहीं। पद्म लेश्या का रंग हल्दी के समान पीला होता है। यह रंग मस्तिष्क व नाड़ी संस्थान को शक्तिशाली बनाता है। मस्तिष्क पर 10 मिनिट तक पीले रंग का ध्यान करने पर बुद्धि बल बदलता है, मन की प्रसन्नता का बढ़ना, मन की दुर्बलता को क्षीण करना, आनन्द का विकास करना है। पीले रंग का ध्यान मस्तिष्क व विशुद्धि केन्द्र पर करने से पुरानी गलत आदतें समाप्त होती है।

वर्ण/रंग - हल्दी के समान पीला, रस मधु से अनन्त गुना मीठा, गंध सुरभी पुष्प की गंध से अनन्त गुना इष्ट, स्पर्श -मक्खन से भी अनन्त गुना कोमल। उसके आभामण्डल में पीतवर्ण की प्रधानता होती है।

चागीभद्रो चोक्खो, अज्जवकम्मो य खमदि बहुगं पि।
साहूगुरूपूजणरदो, लक्खणमेय तु पम्मस्स।।

जीवन में त्याग हो, भावों में भद्रता, व्यवहार और व्यवसाय में हो ईमान और इनके अलावा सरलता, सेवा और क्षमा की सौहार्द्रता, साधु और गुरूजनों की पूजा सेवा में तत्परता ये पद्म लेश्या के लक्षण हैं।

6. शुक्ल लेश्या

आर्तरौद्रे वर्जयित्वा, धर्म्यशुक्ले चचसाधयेत्।
उपशान्तः सदागुप्तः शुक्ललेश्यो भवेत् पुमान्।।

संबोधि अध्याय - 16, श्लोक 28वाँ

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

जो आर्त्त और रौद्र ध्यान का वर्जन करता है, जो धर्म और शुक्ल ध्यान की साधना करता है, जो उपशान्त है और जो निरन्तर मन, वचन काया से गुप्त है वह व्यक्ति शुक्ल लेश्या वाला होता है। समदर्शी, राग - द्वेष से मुक्त, तटस्थ भाव रखना, संत की भाव दशा का आनन्द लेना, वीतरागता, काम, क्रोध, लोभ, मोह, माया समाप्त हो जाती है, मन शांत रहता है। भाव शुद्ध, मन पवित्र, विचार शांत रहते हैं। सफेद रंग का ध्यान करने से तनाव कम, गुस्सा शांत, सिरदर्द समाप्त हो जाता है। पीला, लाल और सफेद तीनों रंग प्रशस्त हैं। शुक्ल लेश्या का रंग - शंख के समान सफेद, रस - मिसरी से अनन्त गुना मीठा, गंध-सुरभी पुष्प से अनन्त गुना इष्ट, स्पर्श - मक्खन से भी अनन्त गुना अधिक कोमल है। जो व्यक्ति शुक्ल लेश्या प्रधान होता है, उसके आभामण्डल में श्वेत वर्ण की प्रधानता होती है।

'ज्यों की त्यों घर दीन्ही चदरिया,
झीनी -झीनी बीनी रे चदरिया'

छहों लेश्याओं को समझने का एक सुन्दर उदाहरण-

'छह व्यक्ति जामुन खाने के लिए जामुन के पेड़ के पास पहुँचे। एक व्यक्ति ने कहा -'इस पेड़ को उखाड़ दो हम बैठे - बैठे फल खा लेंगे'। (कृष्ण लेश्या)

दूसरे ने कहा - 'इससे क्या लाभ बड़ी-बड़ी शाखाओं को काट गिराओ।' (नील लेश्या)

तीसरा बोला - 'नहीं, हमारा काम छोटी शाखाओं से भी चल जाएगा।' (कपोत लेश्या)

चौथे ने कहा - 'केवल फलो के गुच्छो को तोड़ना ही पर्याप्त होगा।' (तैजस लेश्या)

पाँचवें ने कहा - 'हमें गुच्छों से क्या प्रयोजन, केवल फल ही तोड़ने चाहिए।' (पद्म लेश्या)

छठे ने कहा - 'हम इतनी हिंसा क्यों करें? हमें तो फल खाने हैं।' नीचे जामुन के बहुत सारे फल पड़े हैं, हमारे लिए पर्याप्त हैं। (शुक्ल लेश्या)

ये छह लेश्या दो विभागों में विभक्त है। प्रशस्त और अप्रशस्त अथवा धर्म और अधर्म। प्रथम तीन लेश्या अप्रशस्त हैं और शेष तीन प्रशस्त लेश्या हैं। अप्रशस्त लेश्याओं से भव भ्रमण बढ़ता है और प्रशस्त लेश्याओं से मन-बंधन टूटता है। अप्रशस्त लेश्याओं से अशांति, उद्वेग, कलह, क्रोध, भय, घृणा आदि दोष बढ़ते हैं और प्रशस्त लेश्याओं से प्रेम, सद्भाव मैत्री आदि गुणों का विकास होता है।

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

निष्कर्ष

जीव के शुभ-अशुभ परिणाम लेश्या है। आत्मा के द्वारा पुद्गल का ग्रहण होता है और पुद्गल उसके चिन्तन को प्रभावित करते हैं। अच्छे पुद्गल अच्छे विचारों में सहायक बनते हैं और बुरे पुद्गल बुरे विचारों में। कर्मजन्य विकृति तथा न्यूनता के आधार पर परिणाम अच्छे और बुरे होते हैं। जैन दर्शन में इनको छह भागों में विभक्त किया है। इन छह लेश्याएँ का निष्कर्ष निम्न हैं-

1. कृष्ण लेश्या- अत्यन्त बुरे विचार, असंयम प्रवृति में संलग्न रहना, हिंसा में रत रहना, क्रूर व्यवहार करना आदि।
2. नील लेश्या- माया, कपट करना, स्वाद लोलुप होना, पौद्गलिक सुखों की खोज में रत रहना।
3. कपोत लेश्या- कार्य करने या बोलने में मिथ्या, दूसरों को कष्ट देने वाली भाषा का प्रयोग करना। ये तीन अधर्म पाप लेश्याएँ हैं।
4. तेजो लेश्या- ममत्व का त्याग करना, धर्म प्रिय होना
5. पद्म लेश्या- क्रोध न करना, जितेन्द्रय होना।
6. शुक्ल लेश्या- राग- द्वेष रहित होना, आत्मलीन होना। ये तीन धर्म लेश्याएँ हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. समणी मल्लिप्रज्ञा, 2009 जीवन विज्ञान प्रेक्षाध्यान एवं योग, जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ, राजस्थान 341306, पृष्ठ संख्या-33-36.
2. आचार्य महाप्रज्ञ, 2007 प्रेक्षाध्यान प्रयोग प्रद्धति, जैन विश्वभारती, लाडनूँ, राजस्थान 341306, पृष्ठ संख्या-84.
3. मुनि, किशनलाल, 2006 प्रेक्षाध्यान यौगिक क्रियाएँ, जैन विश्वभारती, लाडनूँ, राजस्थान 341306, पृष्ठ संख्या-54.
4. गणाधिपति तुलसी, 2005 प्रेक्षाध्यान प्राण विज्ञान, जैन विश्वभारती, लाडनूँ, राजस्थान 341306, पृष्ठ संख्या-46.
5. आचार्य महाप्रज्ञ 2004 प्रेक्षाध्यान शरीर प्रेक्षा, जैन विश्वभारती, लाडनूँ, राजस्थान, पृष्ठ संख्या-59.

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

6. मुनि, किशनलाल, सुराणा, शुभकरण 2003 जीवन विज्ञान भाग 4, 5, 6, 7, 8, जीवन विज्ञान अकादमी प्रकाशन, लाडनूँ, राजस्थान 341306, पृष्ठ संख्या-39-44.
7. मुनि, धर्मेश 1996 जीवन विज्ञान की रूप रेखा, जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ, राजस्थान 341306, पृष्ठ संख्या-37.